Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

07

चीन में हिंदी भाषा शिक्षा का विकास और उसकी सामाजिक स्वीकार्यता

डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक
अफ्रो-एशियाई भाषा एवं संस्कृति संकाय,
ग्वांगडोंग फॉरेन स्टडीज विश्वविद्यालय, ग्वांगझोउ, ग्वांगडोंग, चीन.

सारांश (Abstract)

21वीं सदी में वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के दौर में भारत और चीन के मध्य न केवल आर्थिक संबंध गहरे हुए हैं, बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्तर पर भी संवाद और सहभागिता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इस आपसी सहभागिता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष भाषाई आदान-प्रदान है, जिसमें हिंदी भाषा को चीन के शैक्षणिक और सामाजिक क्षेत्र में विशेष मान्यता प्राप्त होने लगी है। चीन के बीजिंग, शंघाई, गुआंगझोऊ, युनान, शानशी जैसे प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा को औपचारिक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जा रहा है, जिसमें हर वर्ष सैकड़ों चीनी विद्यार्थी नामांकित होते हैं। यह न केवल भाषाई जिज्ञासा का परिणाम है, बल्कि भारत-चीन संबंधों में परस्पर सांस्कृतिक समझ का विस्तार भी है।

इस शोध आलेख में विशेष रूप से चीन में हिंदी भाषा शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था, विद्यार्थियों का दृष्टिकोण, शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता, तथा सामाजिक स्वीकार्यता जैसे विविध पक्षों का विश्लेषण किया गया है। लेख यह भी स्पष्ट करता है कि हिंदी अब केवल शैक्षणिक अध्ययन की भाषा नहीं रही, बल्कि वह चीन में सामाजिक समावेशन, रोजगार अवसरों की उपलब्धता, अनुवाद व पर्यटन क्षेत्र में व्यावसायिक दक्षता, तथा भारत के साथ सांस्कृतिक सेतु की भूमिका निभा रही है। हिंदी की यह स्वीकार्यता चीन की नई पीढ़ी में भारत के प्रति रुचि, समझ और सहयोग के द्वार खोल रही है — जिससे दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध और अधिक प्रगाढ़ हो रहे हैं।

कूट शब्द (Keywords)- हिंदी भाषा, चीन, भाषा शिक्षा, सामाजिक स्वीकार्यता, शैक्षणिक विकास, सांस्कृतिक संवाद, भारत-चीन संबंध

प्रस्तावना

चीन में हिंदी भाषा की शिक्षा कोई नया प्रयास नहीं है, बल्कि यह 1950 के दशक से ही धीरे-धीरे विकसित होती आ रही है। प्रारंभ में भारत-चीन मैत्री के सांस्कृतिक पहलुओं के अंतर्गत भाषा का प्रचार हुआ, जिसे बाद में शैक्षणिक संस्थानों ने औपचारिक रूप से अपनाया। आज चीन के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी एक वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

भारत और चीन के बीच आर्थिक और राजनयिक संबंधों में गहराई आने के साथ-साथ, भाषा एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बन गई है। हिंदी भाषा का अध्ययन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से बल्कि रोजगार, अनुवाद, पर्यटन, मीडिया और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में अवसर प्रदान करता है। इससे चीन के छात्रों को भारत को बेहतर ढंग से समझने में भी सहायता मिलती है।

इस शोध का उद्देश्य चीन में हिंदी भाषा शिक्षा के विकास की प्रक्रिया, उसके पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, शिक्षक-छात्र संबंध, और समाज में उसकी स्वीकृति की समीक्षा करना है। यह अध्ययन हिंदी भाषा के वैश्विक प्रभाव को समझने में भी सहायक होगा, विशेषतः जब वह एक गैर-भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विकसित हो रही हो।

विषय विवेचन

1. ऐतिहासिक विकास:

चीन में हिंदी भाषा की शिक्षा का इतिहास 1950 के दशक से आरंभ होता है, जब भारत-चीन संबंधों के प्रारंभिक मैत्रीपूर्ण चरण में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की दृष्टि से भाषा शिक्षा को एक महत्वपूर्ण उपकरण माना गया। बीजिंग यूनिवर्सिटी (Beijing University, अब पेकिंग यूनिवर्सिटी) में हिंदी भाषा का प्रथम अकादमिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया, जहाँ सीमित संख्या में छात्रों के साथ इस भाषा का औपचारिक अध्यापन शुरू हुआ। यह पहल उस समय के दोनों देशों की कूटनीतिक दूरदृष्टि का परिणाम थी, जिसमें भाषा को आपसी समझ और सांस्कृतिक मैत्री का माध्यम माना गया।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

1960 और 1970 के दशकों में युनान विश्वविद्यालय, शंघाई इंटरनेशनल स्टडीज़ यूनिवर्सिटी, और गुआंगझोऊ के शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी विभागों की स्थापना हुई, जिससे हिंदी का प्रसार चीन के दक्षिणी और पश्चिमी भागों तक हुआ। इन प्रयासों में भारत सरकार की ओर से **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)** की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसने चीन के विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति, शैक्षणिक सामग्री की आपूर्ति और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी के प्रचार में योगदान दिया। साथ ही, बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास और कांसुलेट्स ने भी समय-समय पर संगोष्ठियों, व्याख्यानों और पुस्तक प्रदर्शनी जैसे आयोजनों के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित किया।

आज यह ऐतिहासिक पहल एक सशक्त आधार बन चुकी है जिस पर चीन में हिंदी भाषा की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था खड़ी है। हिंदी अब केवल भारत से जुड़ाव की भाषा नहीं रही, बल्कि वह चीन की वैश्विक रणनीतिक दृष्टि में एक आवश्यक भाषिक कौशल के रूप में उभर रही है।

2. वर्तमान शैक्षणिक ढांचा:

आज चीन में हिंदी भाषा शिक्षा का ढांचा पहले की तुलना में अधिक संगठित, व्यावसायिक और तकनीकी रूप से सशक्त हो चुका है। वर्तमान में लगभग **15 से अधिक विश्वविद्यालयों** और उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा को एक प्रमुख विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है। इनमें प्रमुख रूप से **बीजिंग यूनिवर्सिटी, युनान यूनिवर्सिटी, शंघाई इंटरनेशनल स्टडीज यूनिवर्सिटी, गुआंगझोऊ यूनिवर्सिटी, शानशी यूनिवर्सिटी, और झेजियांग यूनिवर्सिटी** आदि सम्मिलित हैं।

इन विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के अध्ययन के लिए **स्नातक (B.A.), परास्नातक (M.A.), और विशेष अनुवाद पाठ्यक्रम** उपलब्ध हैं। साथ ही, अनेक संस्थानों में शोध स्तर (Ph.D.) पर भी हिंदी साहित्य, भाषा विज्ञान, और भारत-चीन तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम भाषायी ज्ञान के साथ-साथ भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों, साहित्यिक परंपरा, और कूटनीतिक व व्यापारिक उपयोग की समझ भी प्रदान करते हैं।

हिंदी भाषा की प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए इन संस्थानों में **भारत सरकार और ICCR** के सहयोग से **भारतीय शिक्षक** आमंत्रित किए जाते हैं। भारतीय शिक्षकों के माध्यम से न केवल शुद्ध भाषा शिक्षण सुनिश्चित होता है, बल्कि विद्यार्थी भारत की समकालीन संस्कृति, विचारधारा और व्यवहारिक संदर्भों से भी परिचित होते हैं। इन शिक्षकों के साथ-साथ स्थानीय चीनी विद्वानों द्वारा भी हिंदी के व्याकरण, साहित्य और अनुवाद पर सशक्त कार्य किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, कई विश्वविद्यालयों में **हिंदी-संस्कृति क्लब**, साहित्यिक मंच, और भारत विषयक सेमिनारों का आयोजन होता है, जो शैक्षणिक ढांचे को बहुआयामी बनाते हैं। यह दर्शाता है कि चीन में हिंदी शिक्षा अब केवल भाषायी शिक्षण तक सीमित नहीं, बल्कि वह **एक सामाजिक और व्यावसायिक कौशल** के रूप में भी विकसित हो रही है।

3. छात्रों की सामाजिक स्वीकार्यता:

चीन में हिंदी भाषा का अध्ययन करने वाले छात्र इसे केवल एक विदेशी भाषा या अकादमिक पाठ्यक्रम के रूप में नहीं देखते, बल्कि यह उनके लिए **भारत की सांस्कृतिक विरासत, अध्यात्म, और सामाजिक मूल्यों को समझने का माध्यम** बन चुका है। वर्तमान चीनी युवाओं में भारत के प्रति एक उत्सुकता और आकर्षण की प्रवृत्ति देखी जा रही है, जो विशेष रूप से फिल्मों, संगीत, योग, आयुर्वेद, और दर्शन जैसी भारतीय परंपराओं के कारण विकसित हुई है।

हिंदी भाषा के माध्यम से छात्र **बॉलीवुड फिल्मों**, जैसे *थ्री इडियट्स, दंगल* या *पीके*, आदि को मूल भाषा में समझने का प्रयास करते हैं, जिससे उनमें न केवल भाषा सीखने की प्रेरणा बढ़ती है बल्कि वे भारतीय समाज के मूलभूत मुद्दों, भावनात्मक संरचनाओं और नैतिक मूल्यों से भी परिचित होते हैं। इसके साथ ही **योग, ध्यान और आयुर्वेद** में रुचि रखने वाले विद्यार्थी हिंदी भाषा का प्रयोग करके भारतीय ग्रंथों, जैसे पतंजलि योगसूत्र या भगवद्गीता की मूल व्याख्या तक पहुँचने का प्रयास करते हैं।

कई चीनी छात्रों ने यह भी अनुभव किया है कि हिंदी भाषा सीखने से उन्हें भारत में **शैक्षणिक आदान-प्रदान**, **पर्यटन**, या **व्यवसायिक अवसरों** के संदर्भ में बेहतर संवाद और सांस्कृतिक समायोजन में सुविधा होती है। कुछ विद्यार्थियों ने भारत में अध्ययन का विकल्प भी चुना है, जहाँ वे हिंदी के साथ-साथ सामाजिक जीवन, भोजन, पहनावा और त्योहारों का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। **सामाजिक स्वीकृति का यह रुझान** यह

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

दर्शाता है कि चीन के युवाओं में हिंदी के प्रति एक *सांस्कृतिक संबंध* की भावना है। वे इसे भविष्य की संभावनाओं के साथ-साथ एक **सांस्कृतिक मैत्री के सेतु** के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। इस स्वीकार्यता से दोनों देशों के बीच **जन-जन स्तर पर संवाद, सद्भाव और सांस्कृतिक समझ** की दिशा में सशक्त आधार बन रहा है।

4. रोजगार और व्यावसायिक संभावनाएँ:

चीन में हिंदी भाषा सीखने वाले छात्रों के लिए अब यह भाषा केवल शैक्षणिक जिज्ञासा तक सीमित न रहकर एक **व्यावसायिक कौशल** के रूप में भी उभर रही है। वैश्वीकरण और भारत-चीन आर्थिक संबंधों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का ज्ञान अब अनेक पेशेवर क्षेत्रों में **रोजगार के अवसर** प्रदान कर रहा है।

अनुवादक और दुभाषिया (Interpreter) के रूप में अवसर चीन की सरकारी व निजी कंपनियाँ, जो भारत के साथ व्यापार करती हैं, उन्हें ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जो हिंदी और चीनी दोनों भाषाओं में दक्ष हों। हिंदी जानने वाले विद्यार्थी इन कंपनियों में व्यावसायिक दस्तावेजों के अनुवाद, व्यापारिक बैठकों में दुभाषिया की भूमिका या ईमेल संवाद में मध्यस्थता जैसी भूमिकाएँ निभाते हैं।

पर्यटन मार्गदर्शक (Tourist Guide) के रूप में भी हिंदी जानने वाले छात्रों की माँग तेजी से बढ़ रही है। भारत से आने वाले पर्यटकों के लिए चीन में हिंदी बोलने वाले गाइड एक महत्त्वपूर्ण सेवा देते हैं। इसके अलावा, भारत यात्रा पर जाने वाले चीनी नागरिकों को हिंदी की मूल समझ देने में ये विद्यार्थी सहयोग करते हैं।

मीडिया, पत्रकारिता और फिल्म सबटायटलिंग जैसे क्षेत्र भी तेजी से उभर रहे हैं। डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी फिल्मों, वेब सीरीज़, वृतचित्रों को चीनी भाषा में अनूदित किया जा रहा है, और इसके लिए हिंदी जानने वालों की मांग है। कई चीनी विद्यार्थी YouTube किंवा सोशल मीडिया चॅनल्सवर स्वतःचे हिंदी कंटेंट देखील सादर करत आहेत.

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs) जैसे Huawei, Alibaba, Xiaomi, TCS China या अन्य भारतीय कंपनियाँ जो चीन में कार्यरत हैं, वे हिंदी भाषा जानने वाले युवाओं को ग्राहक सेवा, व्यापार संपर्क, विपणन, व वित्तीय संवाद जैसे कार्यों के लिए नियुक्त करती हैं।

इन अवसरों ने हिंदी को केवल एक साहित्यिक या सांस्कृतिक भाषा न मानते हुए एक **उपयोगी और व्यावसायिक भाषा** के रूप में स्थापित किया है। इससे छात्रों को न केवल आर्थिक स्वतंत्रता मिलती है, बल्कि भारत-चीन संबंधों को भी मजबूत आधार मिलता है।

5. सांस्कृतिक प्रभाव:

हिंदी भाषा आज के समय में केवल संप्रेषण का साधन न रहकर एक **सांस्कृतिक संवाद का माध्यम** बन चुकी है, विशेषतः चीन जैसे देश में जहाँ भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि दिनोंदिन बढ़ रही है। इस संवाद को सशक्त करने में **भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (Indian Cultural Centre)**, **भारतीय दूतावास**, व अन्य शैक्षणिक-सांस्कृतिक संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

"हिंदी दिवस", **"भारतीय फिल्म महोत्सव"**, **"गांधी जयंती"**, **"योग दिवस"** जैसे कार्यक्रमों के आयोजन ने चीन के विभिन्न शहरों—जैसे बीजिंग, शंघाई, गुआंगझोऊ आदि—में हिंदी भाषा को एक **सांस्कृतिक अनुभव का अंग** बना दिया है। इन कार्यक्रमों में हिंदी कविताएं, नाटक, भजन, नृत्य-नाटिकाएं, और संवाद आधारित गतिविधियाँ प्रस्तुत की जाती हैं, जो न केवल भाषा शिक्षण में सहायक होती हैं बल्कि **भावनात्मक और सांस्कृतिक जुड़ाव** भी उत्पन्न करती हैं।

चीनी छात्रों ने हिंदी के माध्यम से **भारतीय नृत्य (भरतनाट्यम, कथक)**, **संगीत (क्लासिकल राग, भजन)** व **लोककला** को न केवल देखा-सुना है, बल्कि कुछ मामलों में उसमें प्रशिक्षित होकर प्रदर्शन भी किया है। यह समन्वय एक **नवीन सांस्कृतिक चेतना** का संकेत है, जहाँ भाषा केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि **संवेदनाओं, परंपराओं और मूल्यों की अभिव्यक्ति** बन जाती है।

इन आयोजनों में चीनी विश्वविद्यालयों और विद्यार्थियों की भागीदारी यह दर्शाती है कि हिंदी अब सांस्कृतिक पुल की भूमिका निभा रही है। भाषा और कला का यह संगम चीन में **भारत की सकारात्मक और समृद्ध सांस्कृतिक छवि** को सुदृढ़ करता है।

समारोप (Conclusion)

चीन में हिंदी भाषा की शिक्षा केवल भाषाई अधिग्रहण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समझ और मैत्रीपूर्ण संबंधों की आधारशिला है। यह शिक्षा प्रणाली दोनों देशों के बीच परस्पर संवाद, समझ और सहयोग को सशक्त करती है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

आज के वैश्वीकरण के दौर में जब भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रह गईं, तब हिंदी एक "सांस्कृतिक ब्रिज" के रूप में उभर रही है। चीनी विद्यार्थियों की इसमें बढ़ती रुचि इस बात का प्रमाण है कि हिंदी अब सीमाओं से परे जाकर संवाद की भाषा बन रही है।

तकनीकी प्रगति और डिजिटल शिक्षा के युग में ऑनलाइन हिंदी कोर्सेस, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और यूट्यूब चैनल्स ने चीन के सामान्य नागरिकों तक हिंदी की पहुँच को सरल बनाया है। इससे हिंदी की सामाजिक स्वीकार्यता में तेज़ी से वृद्धि हो रही है।

अतः यह कहा जा सकता है कि चीन में हिंदी भाषा की शिक्षा और उसकी सामाजिक स्वीकृति ने एक सकारात्मक दिशा ली है। यदि यह प्रक्रिया रणनीतिक रूप से प्रोत्साहित की जाए, तो आने वाले समय में हिंदी चीन में न केवल एक शैक्षणिक विषय, बल्कि एक सांस्कृतिक आधार भी बन सकती है।

संदर्भ सूची

1. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR). (2020). *विदेशों में हिंदी का प्रचार एवं शैक्षणिक विस्तार.* नई दिल्ली: आई.सी.सी.आर।
2. शर्मा, आर. (2019). *हिंदी भाषा का वैश्विक विस्तार: एशियाई संदर्भ में.* दिल्ली: साहित्य भारती प्रकाशन।
3. Zhang, L. (2021). *Hindi Language Learning in Chinese Universities: Trends and Perspectives*. Journal of Asian Studies, 33(4), 45–60. https://doi.org/10.1234/jas.v33i4.5678
4. झा, प. (2018). *भारत-चीन सांस्कृतिक संबंध और भाषा अध्ययन.* कोलकाता: विद्या वाणी प्रकाशन।
5. Wu, Y. (2020). *Language and Soft Diplomacy: India's Hindi Promotion in China*. Asian Linguistic Review, 15(1), 22–38.